नारी की यशोगाथा और प्रेरणा

Suryakanth
Research Scholar
Department of Hindi, Bangalore University, Bangalore

अनादिकाल से नारी शोषित होती आ रही है। समाज ने उसे अबला नाम से कहकर बाहर तक आने दिया था और चार दीवालों के बीच बंधन में रखकर पुरुष की दासी बनाकर रख दिया था। यह एक परम्परा के रूप में चलती आ रही है। नारी को सबलीकृत करने का प्रयत्न भी कम नहीं हुआ लेकिन आज तक उसको सबल बनाने में कहीं असफलता का अनुभव कर रहे हैं। पुरुषाधिकार समाज में नारी केवल को भोगवस्तु के रूप में देखा गया तथा स्वतंत्र से उसे रहने नहीं दिया गया। बचपन में माता-पिता के संरक्षण में , विवाहोपरांत पति के संरक्षण में, बुढापे में संतान की देख-रेख में रहना था। उसे एक अवलम्बित वस्तु के समान गणना की गयी थी। स्वतंत्र पूर्व भारत हो या स्वतंत्रोत्तर हो लेकिन नारी आज भी उसी हालात में जी रही है। "यत्रनार्यस्तुपूज्यंतेरमंतेतत्र देवता:" इस प्रकार की उक्ति वेदकालीन समय से लेकर आज कल के समाज सुधारकों की मुह से निकल रही है किन्तु नारी को देखने का दृष्टिकोन मात्र नहीं बदला। सम्भवत: पुरुष अपने अधिकारों को समान रूप नारी को देने या समान मानने को तैयार नहीं है और उसकी संकीर्ण मानसिकता में कोई परिवर्तन नहीं आया है।

स्वतंत्रोत्तर भारत में भी गाँधी जी ने कहा था कि- "जब तक आधी रात में नारी आकेली सुरक्षित रूप से घर नहीं आयेगी तब तक स्वतंत्रता का अनुभव भारतवासी नहीं कर सकते हैं" यह उक्ति आज के संदर्भ के लिए भी लागू होती है, कारण यह है कि नारी आज भी रात में अकेली नहीं जा भी नहीं सकती और घर वापस नहीं आ भी सकती है। साहित्य के दिग्गज , समाज सुधारक, प्रगतिवादी चिंतक आदि ने नारी का सबलीकरण नारा बुलंद किया और प्रत्येक क्षेत्र में आरक्षण की सुविधा के लिए आंदोलन चलाया। नारी को शिक्षित होने के लिए अवसर दिलाने में सफल भी हुए किन्तु नारी के प्रति होनेवाले अन्याय और अत्याचारों को

रोकने में अपेक्षित मात्रा में सफल नहीं हो पाये। नारी को देखने के दृष्टिकोन में परिवर्तन आने की बहुत बड़ी जरूरत है। नारी को अपने के प्रति होनेवाले अन्याय और अत्याचारों के विरुद्ध लड़ने के लिए प्रेरित करनेवालों के सायित्यकारों में शैलेंद्रकुमार सिंह चौहान का नाम इस संदर्भ के लिए उल्लेख कर सकते हैं। सामाजिक , राजनीतिक, आर्थिक, व्यावसायिक, वैज्ञानिक आदि क्षेत्रों में नारी समान स्थान-मान देने के सम्बंध में राष्ट्र के स्तर पर बडी गम्भीर चर्चाएँ हो चुकी है। सरकारों द्वारा प्रदत्त आश्वासन केवल दस्तेवाज तक रह चुके हैं कोई कारवाही नहीं हो पाने के कारण उन्हें उसके खिलाफ लडने के लिए प्रेरित करनेवालों में शैलेंद्रकुमार सिंह चौहान का नाम उल्लेखनीय है। आपने साहित्य क्षेत्र में अथक परिश्रम किया है। समाजवाद के प्रतिपादक तथा यथार्थवाद के समर्थक चौहान की कविता “आया समय उठो तुम नारी” में जीता-जागता चित्रण किया है। आपके मतानुसार नारी के प्रति कोई करुण और दया दिखाने की आवश्यकता नहीं है। उसके बदले में अपने प्रति रचनेवाले षडयंत्र, अन्याय, अत्याचार, जैसे अमानवीय व्यवहारों के प्रति लडने के लिए प्रेरणा स्रोत बनना आवश्यक है। हमारे नेता गण ने अपने भाषणों में नारी का सबलीकरण पर विचार तो करते हैं लेकिन करना श्यून्य के समान हैं। कवि ने नारी की इस दु:स्थिति को देख कर अपनी कविता के द्वारा उसे जागृत करने का प्रयत्न किया है।

वे अपने कविता के माध्यम में नारी को जागृत करने का संकल्प करते हुए कहते हैं- हे नारी आजादी केवल पुरुष के लिए मात्र नहीं मिली समूचे भारत के लिए मिली हुई है , उसमें तुम भी एक सदस्या है। सबके समान स्वतंत्र हो, उसकी नींव डालने का समय अब तुमें मिला हुआ है। तुम जातृत होना आज के लिए जरूरी है। घर के चार दीवरों को और अपने बंधन के जंजीरों को तोड कर बाहर निकल आओ। कवि द्वारा अभिव्यक्त विचारों में सत्यता स्पष्ट रूप से दिखायी देती है। सबके साथ प्रगति करने का हक तुम्हें मिल चुका है किन्तु अपने अज्ञान के कारण जिन बंधनों में जकडी हुई हो उनसे मुक्त होकर अपनी प्रगति के पथ को स्वयं प्रशस्त

करने का प्रयत्न करो। तुम्हारी निर्बलता का उपयोग करने के द्वारा पुरुष अहं से तुम्हारे प्रति अन्याय कर रहा है।

कवि नारी को समझाते हुए कहते हैं- किसने कहा तुम अबला हो ? यह तुम्हारा भ्रम है , एक बार अन्यायों के विरुद्ध कसकर तैयार हो जाओ, परिणाम तुम्हारे दृगों के सामने आ जाते हैं। जगत की सृष्टि का मूल तुम हो किन्तु स्वयं अपनी शक्ति को नहीं जानती हो। इस संसार के गौरव मूल तुम्हारी निस्वार्थ सेवाएँ हैं। भूमाता की सहन शक्ति तुझमें समाहित है। यह तुम्हारी कमजोरी मत समझो , सहन की भी एक सीमा होती है। वह अब तक पार हो चुकी है। आज भी तुम परम्परागत विचारों के बंधन में रह कर पुरुष की स्वर्थपरता के यज्ञ की समधी बनेगी तो तुम्हारा उज्वल भविष्य और तमग्रस्त होकर तेरी आशा और आकांक्षाएँ निरर्थक हो जायेंगी। दुर्गा , लक्ष्मी, सरस्वति आदि के स्वरूपिणी तुम एक नर मनुष्य के अमानवीय व्यवहारों के प्रति लड नहीं सकोगी ? कवि ने वर्तमान समाज के समग्र नारी के प्रति होने वाले अन्यायों का परोक्ष रूप से रखांकित करते हुए नारी को प्रेरित करने का प्रयत्न किया है। साहस , त्याग, ममता, वात्सल्य, दया जैसे गुणों के मूर्तिमान तुम इस समाज मूल स्रोत हो, तुम्हारे अभाव में सार्थक समाज की कल्पना तक नहीं कर सकते हैं। पौरणिक और ऐतिहासिक संदर्भों में दिखायी देनेवाली सबल नारी आज अबला कैसे बन सकती हो। तुम्हें जागृत होने का समय तो आ चुका है। उसका सदुपयोग करते हुए अपनी ताकत का प्रदर्शन करने की आवश्यकता है। तुम्हें यह सिद्ध जरूर करना होगा कि मैं अबला नहीं हूँ , सबला। कवि के शब्दों में प्रेरणादायक भाव देखा देता है। वर्तमान समाज में नारी को सबलीकृत करने पर वे अग्रसर रहना स्पष्ट रूप से दिखायी देता है।